JAIN REFERENCE LIBRARY ACHARYA SURENDRASURI JAIN TATVA GYANSHALA Page 1/1



ओही जस्स सो अणंतोही। × × × अधवाऽवयव-विणासाणं वाचओ अंतसद्दो घेत्तव्वो, ओही मज्जाया उक्कस्साणंतादो पुधभूदा। अन्तश्च अवधिश्च अन्तावधी, न विद्येते तौ यस्य स अनन्तावधिः। अभेदाज्जीवस्यापीयं संज्ञा। अनन्तावधयश्च ते जिनाश्च अनन्तावधिजिनाः। (धव. पु. ६, पृ. ५१-५२)। **जिस ज्ञान की अवधि (मर्यादा) उत्कृष्ट अनन्त है, अर्थात् जो ज्ञान अनन्त वस्तुओं को विषय करता है, वह अनन्तावधि कहलाता है; ऐसा ज्ञान जिन जिनों के—कर्मविजेताओं के—होता है उन्हें अनन्तावधिजिन जानना चाहिए।**

**अनन्तावबोध**—अतीतानागत-वर्तमानाऽनन्तार्थ-व्यंजनपर्यायात्मकसूक्ष्मान्तरित-दूरार्थेषु अनन्तेषु अप्रतिबद्धप्रवृत्तिरमलः केवलाख्योऽनन्तावबोधः। (लघुस. सि. पृ. ११६)।

**त्रिकालवर्ती समस्त द्रव्यों की अनन्त अर्थपर्यायों और व्यंजनपर्यायों को, तथा सूक्ष्म, अन्तरित और दूरवर्ती पदार्थों को निर्बाधरूप से जानने वाला निर्मल केवलज्ञान अनन्तावबोध कहलाता है।**

**अनन्तोपभोग**—१. निरवशेषस्योपभोगान्तरायस्य प्रलयात् प्रादुर्भूतोऽनन्त उपभोगः क्षायिकः। (स. सि. २-४)। २. निरवशेषोपभोगान्तरायप्रलयादनन्तोपभोगः क्षायिकः। (त. वा. २, ४, ५)।

**उपभोगान्तराय के निर्मूल विनष्ट हो जाने पर जो उपभोग प्रादुर्भूत होता है उसका नाम अनन्तोपभोग है।**

**अनपनीतत्व**—अनपनीतत्वं कारक-काल-वचन-लिङ्गादिव्यत्ययरूपवचनदोषापेतता। (समवा. अभय. वृ. ३५; रायप. मलय. वृ. पृ. १७)।

**कारक, काल, वचन और लिंग आदि के व्यत्ययरूप वचनदोष से रहित वाक्यप्रयोग को अनपनीतत्व कहते हैं।**

**अनपवर्तन**—अनपवर्तनं यथावस्थितिकं पुरा बद्धं तस्य तावत्स्थितिकस्यैवानुभवनम्। (संग्रहणी वृ. २५६)।

**पूर्व में बांधी हुई कर्मस्थिति का ह्रास न होकर उतनी ही स्थितिरूप कर्म का अनुभवन करने को अनपवर्तन कहते हैं।**

**अनपवर्तनीय**—अनपवर्तनीयं पुनस्तावत्कालस्थित्येव, न ह्रासमायाति स्वकालावधेरारात्। × × × एवं हि तीव्रपरिणामप्रयोगबीजजनितशक्ति तदायुरात्तमतीतजन्मनि न शक्यमन्तराल एवावच्छेत्तुमित्यनपवर्तनीयमुच्यते। (त. भा. सिद्ध. वृ. २-५१)।

**आयु कर्म की जितनी स्थिति बांधी गई है उतनी ही स्थिति का वेदन करना व अपने काल की अवधि के पूर्व उसका विघात नहीं होना, इसका नाम उसकी अनपवर्तनीयता है। अभिप्राय यह है कि अनपवर्तनीय आयु वह कही जाती है जिसका विघात पूर्व जन्म में बांधी गई स्थिति के पूर्व किसी भी प्रकार से न हो सके।**

**अनभि(धि)गतचारित्रार्य**— अन्तश्चारित्रमोहक्षयोपशमसद्भावे सति बाह्योपदेशनिमित्तविरतिपरिणामा अनभि(धि)गतचारित्रार्याः। (त. वा. ३, ३६, २)।

**अन्तरंग में चारित्रमोहनीय कर्म का क्षयोपशम होने पर और बहिरंग में गुरु के उपदेशादि का निमित्त मिलने पर जो चारित्र रूप परिणाम से युक्त हुए हैं उन्हें अनभिगतचारित्रार्य कहते हैं।**

**अनभिगृहीत मिथ्यात्व**—१. न अभिगृहीतम् अनभिगृहीतम्, यथैक-द्वि-त्रि-चतुरिन्द्रियैर्भद्रकैश्च। (पंचसं. स्वो. वृ. ४-२)। २. परोपदेशं विनापि मिथ्यात्वोदयादुपजायते यदश्रद्धानं तदनभिगृहीतं मिथ्यात्वम्। (भ. आ. विजयो. टी. ५६)। ३. अनभिगृहीतं परोपदेशं विनापि मिथ्यात्वोदयाज्जातम्। भ. आ. मूला. टी. ५६)।

**२ परोपदेश के बिना ही मिथ्यात्व कर्म के उदय से जो तत्त्वों का अश्रद्धान उत्पन्न होता है, उसे अनभिगृहीत मिथ्यात्व कहते हैं।**

**अनभिगृहीता क्रिया** — अनभिगृहीताऽनभ्युपगतदेवताविशेषाणां तत्त्वार्थश्रद्धानम्। (त. भा. सिद्ध. वृ. ६-६)।

**देवताविशेष को स्वीकार न करने वालों के तत्त्वार्थश्रद्धान को—विपरीत तत्त्वश्रद्धा को—अनभिगृहीता क्रिया कहते हैं।**

**अनभिगृहीता दृष्टि**—सर्वप्रवचनेष्वेव साधुदृष्टिरनभिगृहीतमिथ्यादृष्टिः। सर्वमेव युक्त्युपपन्नमयु-



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Mo. 9512234311 www.jainreferencelibrary.org jaintatvagyanshala@gmail.com